ओ३म्

प्यारा अग्नि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

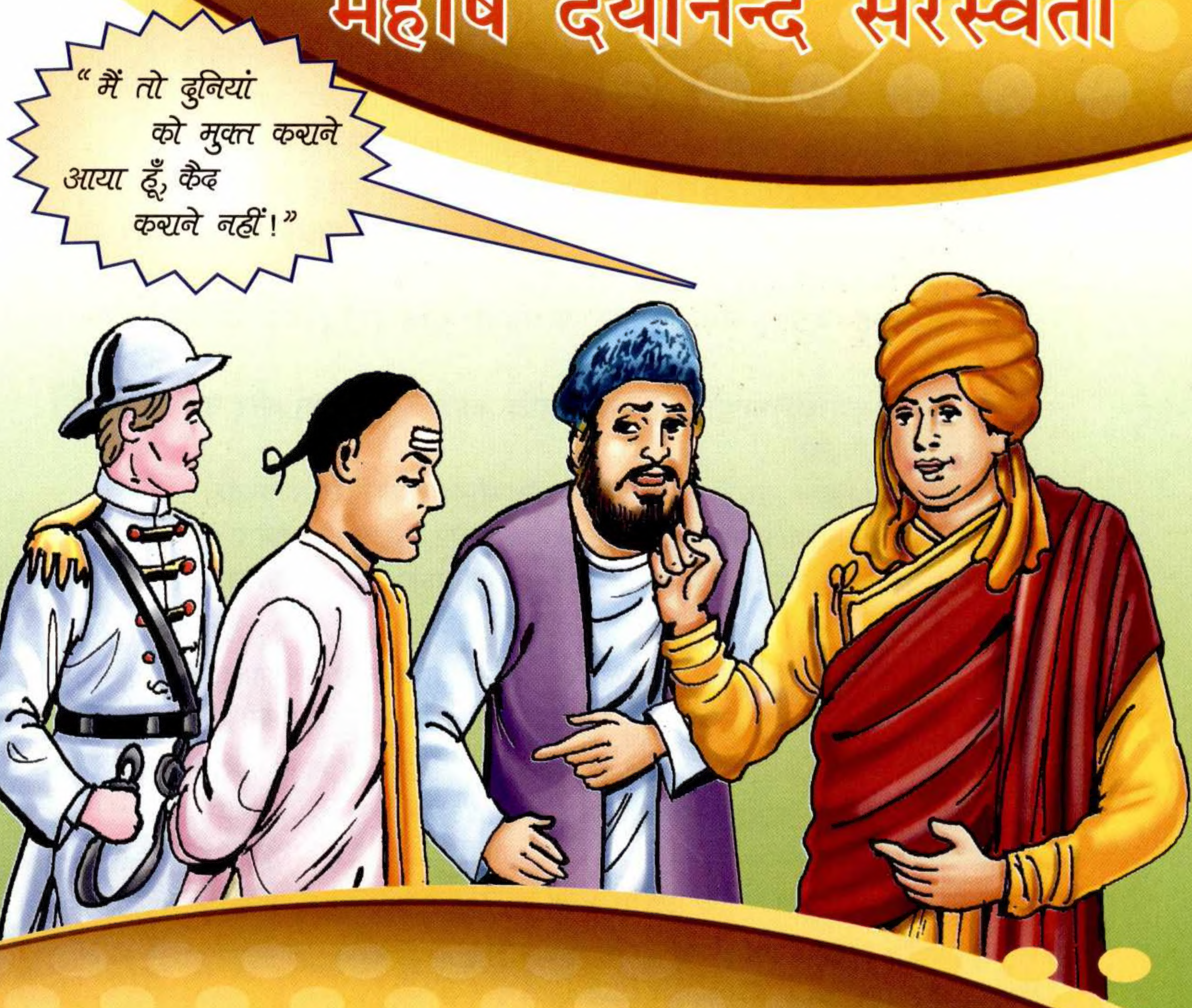

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की
प्रेरणाप्रद घटनाओं पर आधारित चित्रकथाएँ

ओ३म्

जीवन को सफल बनाने के 10 स्वर्णिम सूत्र

जन्म से ही कोई महान् नहीं बनता; और पैदा होने मात्र से कोई सफल नहीं होता। अपितु अपने श्रेष्ठ गुण, कर्मों से ही कोई मनुष्य महान् बन पाता है और अपने जीवन को सफल बना लेता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसे 10 दिव्य गुण 'स्वर्णिम सूत्रों' के रूप में यहाँ बताये जा रहे हैं।

1. **धृति** – धैर्य रखना। कठिन परिस्थितियों में भी विचलित न होना, स्थिर रहना।
2. **क्षमा**– क्षमा करना। मन में बदले की भावना न रखना।
3. **दम**– मन का नियन्त्रण। मन का गुलाम न बन कर मन को अपने वश में रखना।
4. **अस्तेय**– चोरी न करना। मन से, वाणी से और कर्म से कभी चोरी न करना।
5. **शौचम्**– पवित्रता। जल आदि से शरीर की पवित्रता और साधना से मन आदि की पवित्रता।
6. **इन्द्रिय निग्रह**– दसों इन्द्रियों का नियन्त्रण। विचार पूर्वक दसों इन्द्रियों को अपने वश में रखना।
7. **धी**– बुद्धि। सात्विक आचार–विचार से बुद्धि का विकास करना और उसका केवल सदुपयोग ही करना।
8. **विद्या**– यथार्थ ज्ञान, सत्यविद्या को प्राप्त करना और उसका विस्तार करना।
9. **सत्य**– सत्य आचरण। सदा सत्य का ग्रहण करना और असत्य को त्यागना।
10. **अक्रोध**–क्रोध न करना। भावनाओं पर नियन्त्रण पाकर क्रोध न करना। सदा शान्त रहना।

ये हैं वे स्वर्णिम सूत्र (धर्म के 10 लक्षण) जिनके द्वारा मनुष्य महान् और सफल बनता है। इस कॉमिक्स में वर्णित सभी महान् पुरुषों में पग–पग पर आप इन स्वर्णिम गुणों को पायेंगे।

इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर, इनके अनुकरण से हम भी महान् और सफल बन सकते हैं। और इनके समान राष्ट्र व समाज की सेवा कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार में एक ऐसे विलक्षण महापुरुष हुए हैं जिनके जीवन का पल-पल प्रेरणा दायक है। उन्होंने अपना जीवन संसार के उपकार के लिए अर्पित कर दिया था- उनके जीवन की अनेक ऐसी घटनाएँ हैं, जो व्यक्ति को जीवन-निर्माण की सतत् प्रेरणा देती हैं। अतएव बच्चों, आप इन्हें पढ़कर-इन्हें जानकर अपने जीवन में उन्नति के मार्ग पर चलकर देश के सच्चे नागरिक बन सकें, इसी भावना के साथ इस कॉमिक्स को प्रकाशित किया जा रहा है। आप पहले अपने आप पढ़ें तथा फिर अपने मित्रों को भी अवश्य पढ़ाएं।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

संशोधन
रामनिवास 'गुणग्राहक'

(प्यारा ऋषि)

गाली देने वाले पर दया

एक बार स्वामीजी कानपुर में प्रवचन कर रहे थे और श्रद्धालु भक्तगण श्रद्धापूर्वक सुन रहे थे। उनमें एक व्यक्ति ऐसा भी था जो नियमपूर्वक स्वामीजी के प्रवचन स्थल पर पहुँच कर गालियाँ दिया करता था।

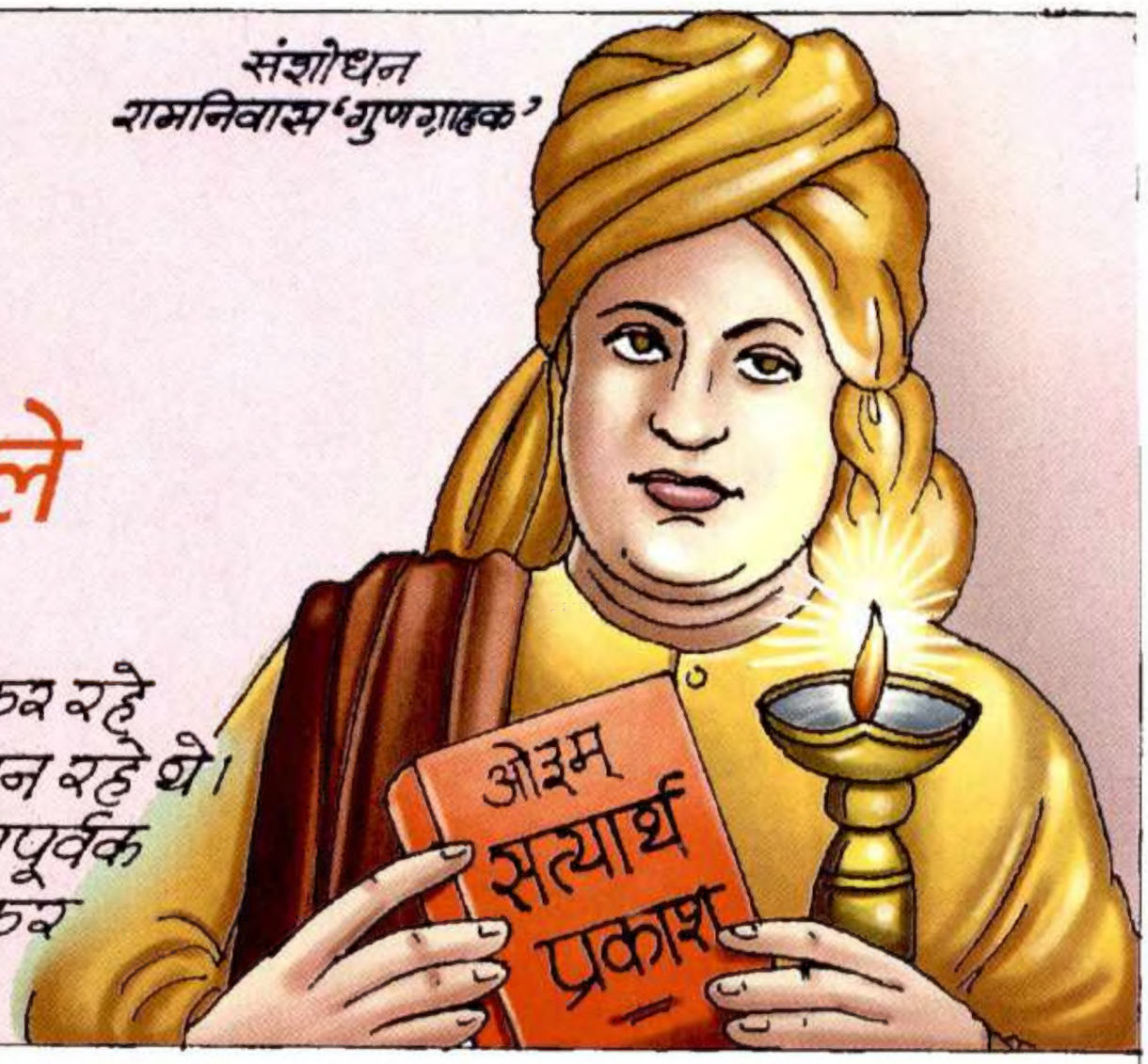

ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है! वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।
यह स्वामी नहीं, बहुत बड़ा ढोंगी है। इसे कोई ज्ञान-योग नहीं आता, केवल लोगों को मूर्ख बनाना आता है।
ओ३म्
वेद
स्वामीजी उस व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न देकर सुना- अनसुना कर दिया करते थे।

श्रद्धालु भक्तगण स्वामीजी के लिए फल-मिठाई ले आया करते थे। और वह उसे लोगों में बांट दिया करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि फल तथा मिठाई अधिक मात्रा में होने से लोगों के बाँटने के बाद भी बच गये। स्वामीजी सोच रहे थे—

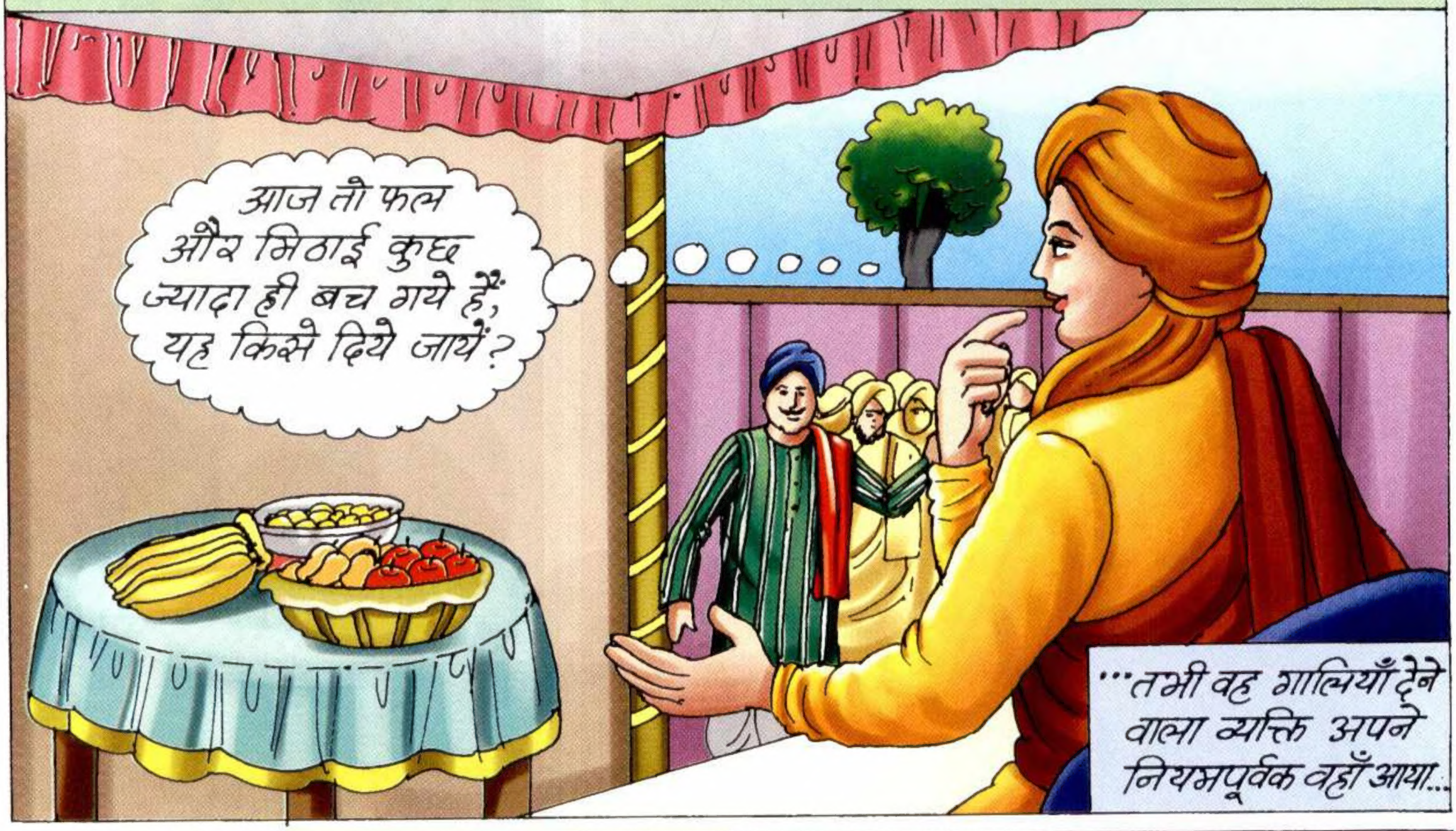

...स्वामीजी ने उसे बुलाकर सब पदार्थ उसे दे दिये, और कहा कि—

वह भी रोज आकर फल व मिठाई ले जाने लगा।

एक दिन उसकी आत्मा ने उसे धिक्कारा। वह स्वामीजी के चरणों में गिर कर कहने लगा—

बच्चों ! क्षमा करना एक महान् गुण है। इसलिए जीवन में क्षमा करना सीखो और महान् बनो।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

स्वदेशी ही वस्तु अपनाने में शोभा

एक बार स्वामी जी अलीगढ़ में प्रवचन दे रहे थे। तभी 'ठाकुर ऊधोसिंह' घाटम निवासी अपने पिता ठाकुर भूपाल सिंह के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। उस दिन ऊधोसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सब के सब विलायती कपड़ो के बने थे। यह देख स्वामी जी बोले--

ऊधव! देखो, तुम्हारे पिता कैसे मोटे, सादे और अपने देश के कपड़े से बने वस्त्र पहनते हैं।...

...उनका जाति बिरादरी में कितना अधिक सम्मान हैं। क्या तुम इस विदेशी कपड़े से बने नये वेश में अपने आप को अपने पिता से भी अधिक सम्मानित समझते हो?

अधव! अपने ही देश में बनी वस्तुओं को अपनाने में ही हमारी और हमारे देश की शोभा है। इसलिये हमें सदा अपने ही देश में बनी वस्तुओं को अपनाना चाहिए।

स्वामी जी का यह उपदेश अधोसिंह के हृदय में पूरी तरह घर कर गया।...

...और घर पहुँचते ही उन्होंने विदेशी वस्त्रों को उतार फेंका और स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिए।

स्वामीजी के वचन सत्य हैं। स्वदेशी वस्तु अपनाने में ही...

...हमारी और हमारे देश की शोभा है।

स्वदेशी की प्रबल भावना के बिना हम अपने देश को सबल नहीं बना सकते। मनुष्य की शोभा स्वदेशी भावना और उत्तम सदाचार से होती है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

जहर देने वाले की कैद से मुक्ति

स्वामीजी सभी वर्ग के लोगों के बीच समान रूप से उठते-बैठते थे। इसमें पंडित व समाज के अन्य लोग स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से बेहद क्रोधित थे।

एक दिन एक पंडित ने स्वामीजी को पान देते हुए कहा—

स्वामीजी! आप महान् हैं। अपना आदर व्यक्त करने के लिए आपको यह पान भेंट करता हूँ। कृपया स्वीकार करें।

पान खाने के थोडी देर बाद—

हे भगवान्! लगता है, इस पान में ज़हर था।

फिर स्वामीजी ने यौगिक क्रियाओं के द्वारा पेट का समस्त भोजन वमन कर दिया और अपने आप को ज़हर के प्रभाव से बचा लिया।

स्वामीजी की हत्या के इरादे से पान में जहर देने वाले अपराधी को शहर के तहसीलदार सय्यद मोहम्मद ने जो स्वामीजी के भक्त बन गये थे कैद कर लिया।

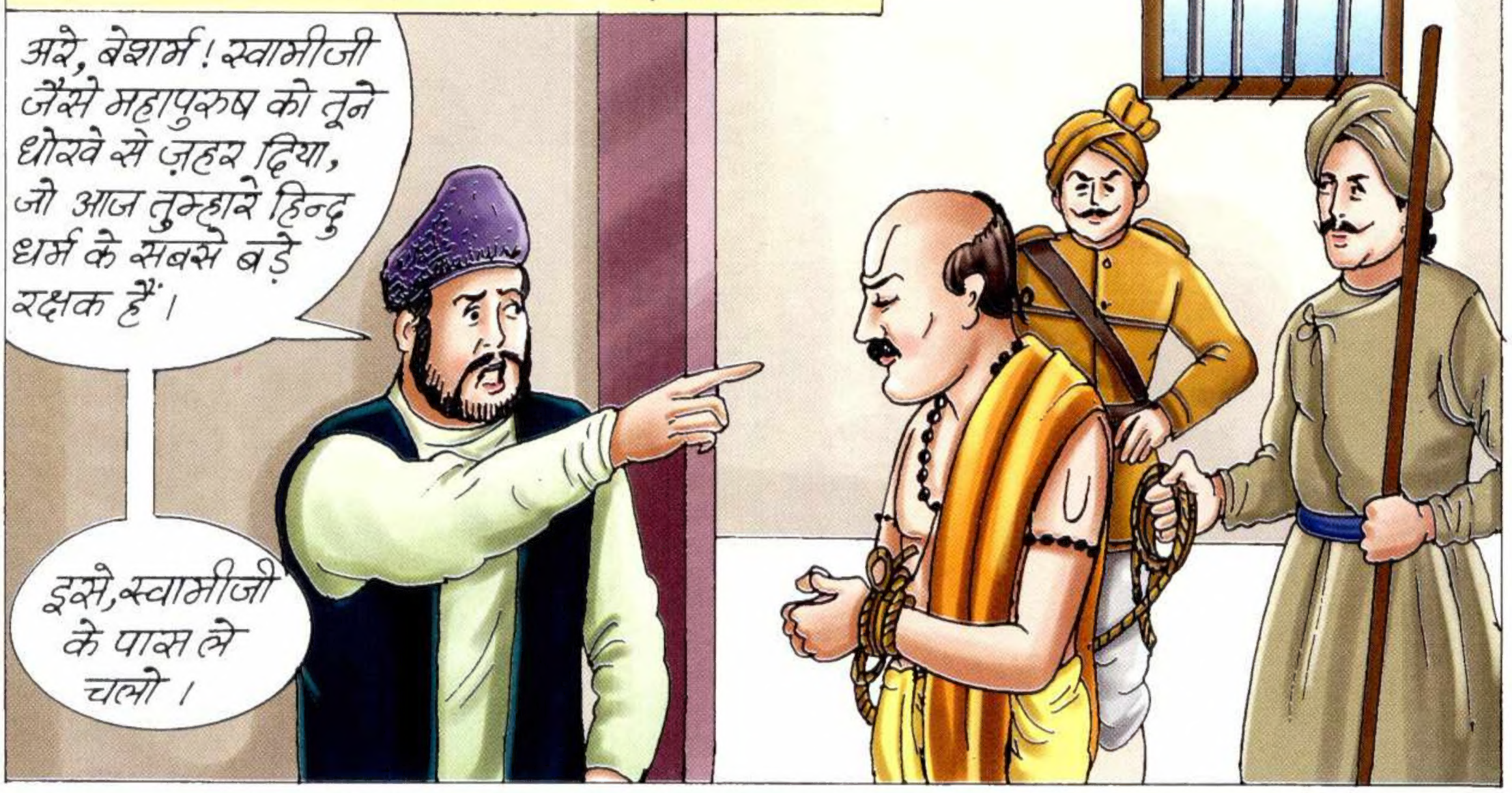

ज़हर देने वाले अपराधी को जब स्वामीजी के सामने लाया गया—

बच्चों ! महर्षि की महानता देखो कि विष देने वालों से भी बदले की भावना नहीं रखते। हमें भी किसी से बदले की भावना नहीं रखनी चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

उपासना धर्म का निरादर

एक दिन स्वामीजी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में पहुँचे, उस समय उपासना हो रही थी। स्वामीजी को आता देखकर...

ओ३म्

आर्य समाज सत्संग सभा (लाहौर)

...सभी सत्संगी स्वामीजी के सम्मान में खड़े हो गये।

उपासना की समाप्ति पर स्वामीजी ने उपदेश दिया कि–

ओ३म्
आर्य सम
सभा
लाहौर

ईश्वर की उपासना में उपासक, **ध्यान** में मग्न होते हैं। ऐसे समय में कोई कितना ही बड़ा मनुष्य आये...

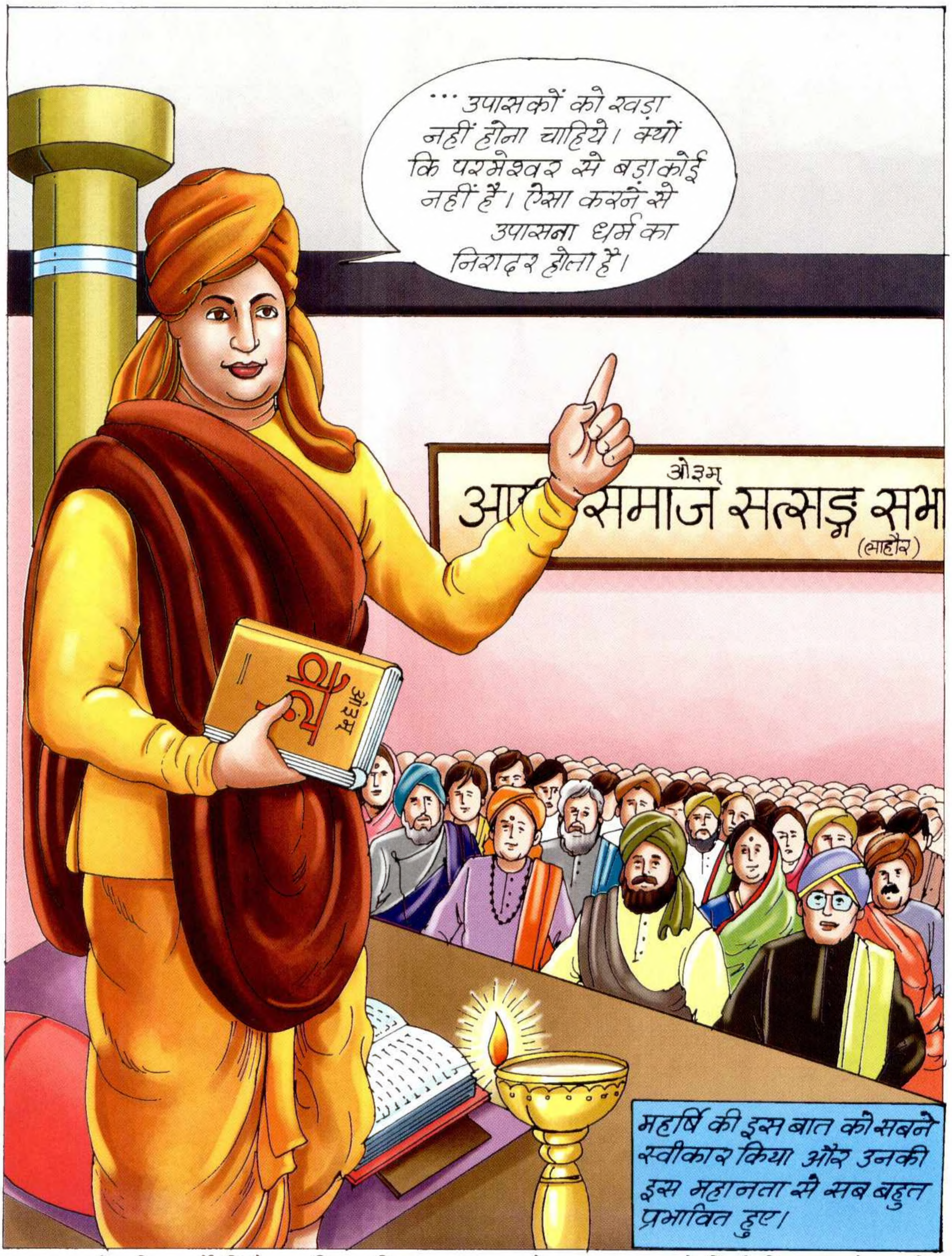
...उपासकों को खड़ा नहीं होना चाहिये। क्यों कि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से उपासना धर्म का निरादर होता है।
ओ३म्
आर्य समाज सत्सङ्ग सभा
(लाहौर)
महर्षि की इस बात को सबने स्वीकार किया और उनकी इस महानता से सब बहुत प्रभावित हुए।

भगवान् की भक्ति सर्वोपरि है। इसलिए भक्ति, उपासना करते समय समाज के किसी शिष्टाचार से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

तब तो रीछ बड़ा त्यागी है

एक दिन बम्बई में स्वामीजी क्षौर करा रहे थे। एक सज्जन ने वहाँ आकर स्वामीजी से सवाल किया–

संन्यासियों का धर्म तो त्याग है, फिर आप...

...देह-विभूषा में क्यों लगे हो?

स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया–

अगर बाल बढ़ाने में ही त्याग है, तब तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी हुआ।

यह कहकर स्वामीजी ने उस सज्जन को उपदेश दिया कि–

देह रक्षा के लिए उसे सँवारना कोई पाप नहीं हैं। जो पुरुष परोपकारी हैं, ...

... उन्हें अपनी देह की रक्षा करना अति-आवश्यक हैं, ताकि वह उपकार-कार्य अच्छी प्रकार से कर सकें।

बाहरी दिखावे के धार्मिक चिन्ह मनुष्य को सच्चा धार्मिक नहीं बनाते। शरीर धर्म का साधन है। शरीर को स्वस्थ एवं सबल रखने से ही धर्म का पालन हो सकेगा।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

सेवा का भाव

भडौंच में स्वामीजी के साथ पण्डित कृष्णराम भी रहते थे। एक दिन पण्डित कृष्णराम को बुखार आ गया। स्वामी दयानन्द जी स्वयं उनका सिर दबाने लगे।

तभी पण्डित कृष्णराम जी बोले–

स्वामीजी ! यह आप क्या कर रहे हैं, मैं आपसे कैसे सेवा करा सकता हूँ ?

स्वामीजी ने हँसकर जवाब दिया–

पण्डित जी ! दूसरों की सेवा करना मनुष्य का धर्म हैं। यदि बड़े छोटों की सेवा न करेंगे, तो छोटों में सेवा का भाव कैसे आयेगा ?

मनुष्य को दूसरों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

बच्चों! सेवा करना मनुष्य का एक महान् गुण है। सेवा करने से कोई छोटा नहीं होता, बल्कि वह महान बनता है। इसलिए सबकी सेवा करनी चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

सर सय्यद अहमद खां और हवन

अलीगढ़ में एक दिन सर सय्यद अहमद खां स्वामीजी से मिलने गये और कहने लगे—

स्वामीजी! आपकी अन्य बातें तो युक्ति संगत हैं, पर यह समझ में नहीं आता कि थोड़े से हवन से वायु का सुधार कैसे हो सकता हैं?

स्वामीजी ने कहा—

जैसे थोड़े से बघार (छौंक) से सारी दाल सुवासित हो जाती हैं और...

...दूर तक उसकी सुगन्ध जाती हैं, ऐसे ही हवन में डाली हुई सामग्री छिन्न-भिन्न होकर...

?

...वायु में फैल कर उसका सुधार कर देती हैं।

स्वामीजी के जवाब से सर सय्यद साहब का संशय दूर हो गया।

बच्चों ! हवन करने से वायु शुद्ध होकर सारे संसार का कल्याण होता है। इसलिए हवन को अपनाओ और संसार का कल्याण करो।

कथा संक्षेप-चित्रांकन
भारत मकवाना

ब्रह्मचर्य का बल

शक्ति मानसिक हो या शारीरिक, दोनों का स्थान हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। स्वामीजी अद्भुत बल के धनी थे, उन्होंने एक बार दो साँडों को लड़ते हुए छुड़ाया–

चलो! परे हटो।

ब्रह्मचर्य की शक्ति से ही कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।

स्वामी जी ने बैल खुलवाए और स्वयं बैलों के स्थान पर लगे और गाड़ी को बाहर निकाल दिया।

हम जो भोजन करते हैं, उससे रस, रक्त माँस आदि के बाद अन्तिम धातु वीर्य बनती है। उसकी रक्षा करना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य से शारीरिक व मानसिक शक्ति का विकास होता है। देखो महर्षि की अद्भुत ताकत।

पटकथा- संवाद - चित्रांकन
भारत मकवाना

ईंट मारने वालों को लड्डू

अमृतसर में एक बाल-पाठशाला के अध्यापक ने एक दिन अपने छात्रों से कहा—

ओ३म्

बच्चो ! आज हम सब स्वामीजी की कथा में चलेंगे । तुम अपनी झोलियों में ईंट, रोड़े और पत्थर भरकर मेरे साथ चलना । जब मैं संकेत करूँ, उसी समय तुम कथा कहने वाले पर...

...ईंट, रोड़े और पत्थर फेंक देना, मैं तुम्हें लड्डू दूँगा ।

जी, गुरुजी !

अबोध बालकों ने ईंट, रोड़े और पत्थरों से अपनी झोलियां भर लीं, और अध्यापक के साथ चल पड़े।

व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। जब थोड़ा अँधेरा होने लगा तब अध्यापक का संकेत पाकर बालक स्वामीजी पर ईंट, रोड़े और पत्थर फेंकने लगे।

व्याख्यान
अमृतसर

सभा में हल-चल मच गई।

स्वामीजी ने खड़े होकर सब को शान्त कर दिया।

शान्त हो जाओ।
शान्त हो जाओ।।

जब सब शान्त होकर बैठ गये तब पुलिस कुछ बालकों को पकड़ कर स्वामीजी के सामने ले आई। तब बालक फूट-फूट कर रोने लगे, स्वामीजी ने उन्हें ढ़ाँढ़स बंधा कर उनसे ऐसा कार्य करने का कारण पूछा, तो बालकों ने सारा वृतान्त सच-सच बता दिया।

उसके बाद स्वामीजी ने बाजार से लड्डू मंगाकर बालकों को दिये। और कहा-

(1) बच्चों का मन कोमल होता है। उन्हें गलत शिक्षा नहीं देनी चाहिए। (2) गलत शिक्षा से बिगड़े कोमल बच्चों को प्रेम व धैर्य से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें सुधारना चाहिए।

पद्मश्री संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

मस्तक-शृंगार या आत्मा का शृंगार

प्रयाग में स्वामीजी के पास नाना प्रकार के तिलक-धारी लोग बैठे थे। स्वामीजी उन्हें कह रहे थे—

मस्तक शृङ्गार करने की अपेक्षा ईश्वरोपासना द्वारा आत्म शृङ्गार किया करो। ऐसे तिलक लगाने से तुम्हारा क्या लाभ है? आडम्बर रचना महात्माओं का काम नहीं। शौक, महाशौक, तिलक आदि चिह्न बनाने में लोगों की रुचि रहती है...

...योगाभ्यास में नहीं। मूरखों! जितने समय में तुम यह तिलक लगाते रहे, उतने समय में गायत्री क्यों न जप ली?

माला तिलक धारण करने से न तो स्वभाव सुधारता है और न आत्म-कल्याण होता है। ईश्वर भक्ति, गायत्री जाप करने से ही कल्याण सम्भव है।

कथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

गुरू सेवा गुरू दक्षिणा

सच्चे गुरु की तलाश करते हुए ३६ वर्ष की उम्र में दयानन्द की भेंट गुरु विरजानन्द से हुई। जब दयानन्द गुरु के द्वार पर पहुँचे—

कौन?

मैं यही जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ? मुझे सत्य की खोज है। मैंने वेदांत और योग का अध्ययन किया है और सारस्वत ग्रंथों से संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है। फिर भी मुझे शांति नहीं मिली।

पहले इन ग्रंथो को यमुना में फेंक कर मेरे पास आओ।

जो आज्ञा!

फिर दयानन्द ने बिना किसी हिचक के उन ग्रंथों को यमुना में फेंक दिया।

एक बार भूमि बुहारते दयानन्द से कुछ कचरा रह गया और गुरुजी का पैर उस कचरे पर पड़ गया...

...गुरुजी नाराज होकर दयानन्द को मारने लगे...

...वे बिना बुरा माने गुरु की मार सहते रहे।

दयानन्द ने गुरु के चरणों में अपना शीश नवाया और कहा-

गुरुजी! मुझे मारने से आपको जो पीड़ा हुई उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

स्वामी दयानन्द, विरजानन्द के आश्रम में ढ़ाई वर्ष तक रहे। उन दिनों, शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। विदा होते समय विरजानन्द ने अपने इस होनहार शिष्य से पूछा—

अब तुम पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुके हो दयानन्द। बताओ गुरु दक्षिणा के रूप में मुझे क्या दे रहे हो?

गुरुदेव! गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह जरा सी लौंगें हैं इन्हें ही गुरु-दक्षिणा के रूप में स्वीकार करें।

मैं चाहता हूँ दयानन्द! तुम अपने इस ज्ञान को सब दिशाओं में फैला दो, संसार अज्ञान के अंधकार में डूबा पड़ा है।

मैं अक्षरशः आपके आदेशों का पालन करूँगा गुरुदेव।

गुरु आज्ञा के बाद...

संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं।

..दयानन्द सत्य का प्रकाश करने निकल पड़े।

बच्चों ! माता-पिता और गुरु हमारी भलाई के लिए ही हमें डाँट व ताड़ना देते हैं। इसलिए उनकी बात का कभी बुरा नहीं मानना चाहिए।

कथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

मूर्ति पूजा पाखण्ड है।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद गुरु आज्ञा से दयानन्द हरिद्वार के 'कुंभ मेले' में प्रवचन कर रहे थे। जब मूर्ति पूजा खण्डन की बात आयी तो कुछ लोग इस बात से सहमत थे और कुछ विरोधी भी थे।

मित्रों, बन्धुओं! संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं...

...मूर्तिपूजा पाखण्ड है। वेदों में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है। वेदों के पठन-पाठन का अछूतों और महिलाओं, सबको बराबर अधिकार है।

स्वामीजी की बातों से कुछ लोग सहमत थे, और कुछ असहमत थे।

ये पंडे-पुरोहित अपना हित साधने के लिए तुम्हें अज्ञान के अंधेरे में रखते...

...हैं। उनकी बातें मत सुनो।

दयानन्द की बातों से असहमत लोग पथराव करने और नारे लगाने लगे।

दयानन्द ने लोगों के सब प्रहार अपनी पत्थर जैसी छाती पर सहे। यह देख विरोधी दल के लोग भी हक्के-बक्के रह गये।

सत्य के प्रचार और समाज-सुधार के लिए स्वामी जी ने क्या कुछ नहीं सहा?

सत्य बोलने से झूठे धन्धे चलाने वालों की हानि होती है और वे उपद्रव करते हैं। मूर्तिपूजा का विधान वेदों में नहीं है। सत्य बोलने वालों को कष्टों से नहीं डरना चाहिए।

पटकथा संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

जगन्नाथ को क्षमादान

प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ उन्होंने जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।

भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?

इतने बुद्धिमान और समर्थ आदमी के सम्बन्ध एक वेश्या के साथ? छिः छिः!

उसी दिन से नन्हीजान स्वामीजी से बदला लेने की ताक में रहने लगी–

यह फ़कीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुंह बन्द करना ही होगा।

स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।

अंग्रेज़ों व नन्हींजान के षड़यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया। और स्वामीजी पी गये।

स्वामीजी के दूध में ज़हर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रात: काल डॉ. अलीमर्दान खाँ ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में और विष प्रवेश करा दिया।

स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंतत: रसोइये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी और कहा—

मुझे क्षमा कर दीजिए, स्वामीजी। मैंने बहुत भयानक पाप किया है, आपके दूध में शीशायुक्त ज़हर मिला दिया था।

ये तूने क्या किया: वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पैसा ले और यहाँ से चला जा नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देगा।

महर्षि दयानन्द परम योगी थे। उन्होंने तो विष देने वालों को भी माफ किया। हम साधारण लोगों को भी यथा सम्भव क्षमाशील होना चाहिए।

पटकथा- संवाद चित्रांकन
भारत मकवाना

मनुष्य की मनुष्यता

एक दिन दो उच्चराज-कर्मचारी स्वामीजी से मिलने उनके निवास स्थान पर आये, और कहने लगे—

स्वामीजी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—

बच्चों! दूसरों की भलाई करने और सब जीवों को सुख पहुँचाने से ही हमें सच्चा सुख मिलता है, यही मनुष्यपन है।

कथा-संवाद-चित्रांकन
भारत सकवाना

स्त्रियों के मुख्य धर्म

एक बार स्वामीजी भंडोच में वाणी द्वारा अमृत वर्षा कर रहे थे। तभी बहुत से भार्गव ब्राह्मण और स्त्रियां स्वामीजी का उपदेश सुनने आए। स्त्रियों में अधिक संख्या अद्वैतानन्द कि चेलियों की थी। स्वामीजी स्त्रियों से वार्तालाप करना नहीं चाहते थे, पर उनके विशेष आग्रह पर एक पर्दा अपने और उनके बीच डालकर उन्हें उपदेश दिया—

पति-सेवा करना ही तुम्हारा धर्म है, और पतियों से ही उपदेश लेना तुम्हारा कर्तव्य है। साधु-संन्यासियों के दर्शनों के लिए इधर-उधर घूमना...

... स्त्री जाति के लिए अत्यन्त अनुचित है।

ओ३म्

लाहौर में एक दिन कुछ स्त्रियाँ स्वामीजी के दर्शन करने आयीं और पूछा-

स्वामीजी! ज्ञान और शान्ति कैसे मिले?

तुम्हारे पति ही तुम्हारे गुरु हैं। उन्हीं की सेवा करो, किसी साधु को गुरु मत बनाओ। विद्या पढ़ो और अपने पति को...

... हमारे पास भेजा करो। उनके द्वारा हमारे उपदेश से लाभ उठाया करो।

देवियों को कभी किसी को गुरु बनाकर उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। घर परिवार के काम करते हुए गायत्री जाप और वेद शास्त्रों का स्वाध्याय करें, अपना जीवन पवित्र बनाएँ।

पटकथा- संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

ईसाई और पुनर्जन्म

एक बार स्वामीजी लुधियाना में प्रवचन दे रहे थे। उसी समय दो ईसाई प्रवचन स्थल पर आये और स्वामीजी से पुनर्जन्म होता है या नहीं, उस पर शंङ्का की।

स्वामीजी ने उन दोनों से एक सवाल किया–

तुम पहले यह बताओ ! खाना-पीना-सोना आदि देहधारी जीव के लिए सम्भव है या देह रहित जीव के लिए ?

स्वामीजी ! यह तो केवल देहधारी जीव के लिए ही सम्भव है।

तो तुम मानते हो कि जीव का एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना पुनर्जन्म है।

जी, स्वामीजी!

जो आत्माएं स्वर्ग में जाकर अनेक भोग भोगेंगी, वह बिना देह धारण किये कैसे भोगेंगी ? तो क्या वह उनका पुनर्जन्म न होगा ?

ठक

दोनों ईसाई अवाक् रह गये।

बच्चों ! पुनर्जन्म एक परम सत्य है। अपने किये कर्मों के फल हमें इस जन्म में और अगले जन्म में भी जरूर भोगने पड़ते हैं। इसलिए पुनर्जन्म को याद रखकर हम कभी गलत काम न करें।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

ईश्वर—मिलाप का उपाय

एक बार जब स्वामीजी कलकत्ता में थे। वहाँ आदि- ब्रह्म समाज के उपदेशक पं० हेमचन्द्र ने स्वामीजी से एक सवाल किया—

स्वामीजी! ईश्वर से मिलने का क्या उपाय हैं?

लम्बे समय तक योग करने से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती हैं।

स्वामीजी! वह योग कैसा हैं?

इसके उत्तर में स्वामीजी ने अष्टांग योग की व्याख्या करके सुनाई और उपदेश दिया—

तीन घड़ी रात रहे तब उठकर गायत्री का अर्थ सहित ध्यान किया करो। गायत्री मंत्र ही ईश्वर से मिलने की सीढ़ी हैं।

और साथ ही स्वामीजीने पं० हेमचन्द्र जी को गायत्री का अर्थ लिख कर दे दिया।

ऊँच-नीच का भेदभाव सबसे बड़ा पाप है। सब मनुष्यों को अपने समान समझकर सबको अपना बनाना आज का सबसे बड़ा पुण्य और धर्म है।

महर्षि दयानन्द जी के विषय में विभिन्न महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। - लोकमान्य तिलक

2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। - हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल

3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरूषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य,सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। -महात्मा गांधी

4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है,इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। - कस्तूरबा गांधी

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन, कार्य-दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता। - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे, जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। - महर्षि के समकालीन-सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)

7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। - दादाभाई नौरोजी

8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। - महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर

9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बडा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। - लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल

10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। - सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन

11. गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। - प्रथम लोकसभा अध्यक्ष, डॉ०श्री अनन्तशयनम् आयंगर

12. मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरू दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम। - रविन्द्र नाथ टैगोर

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स

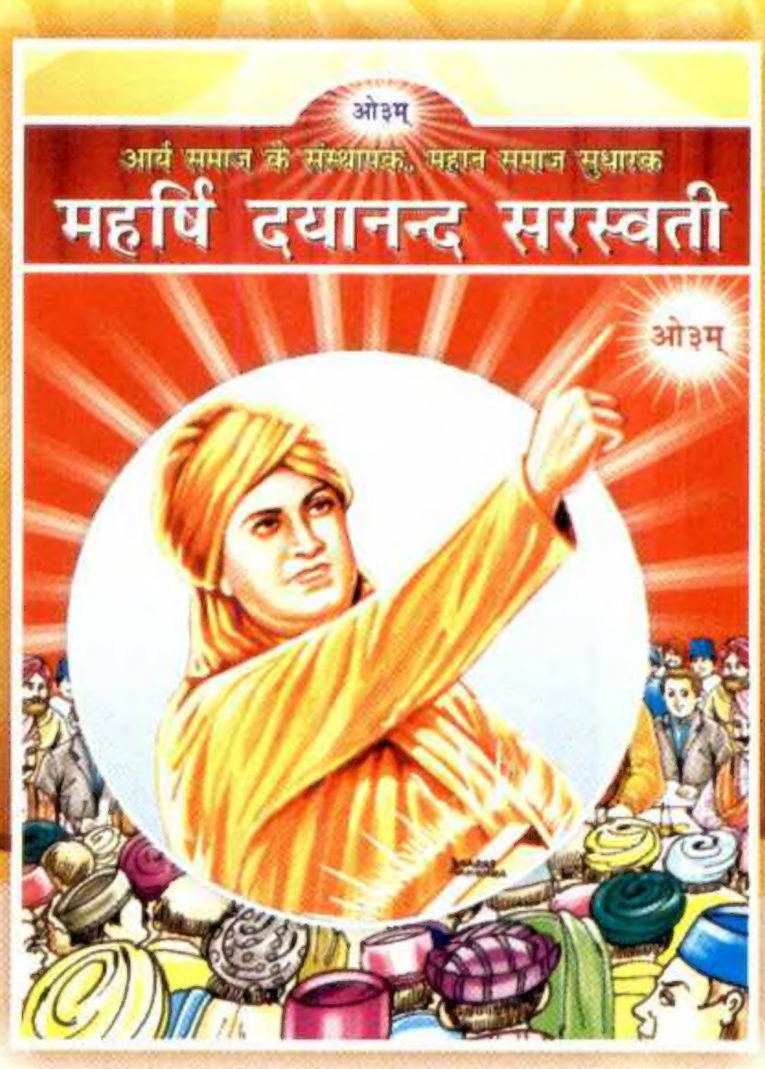

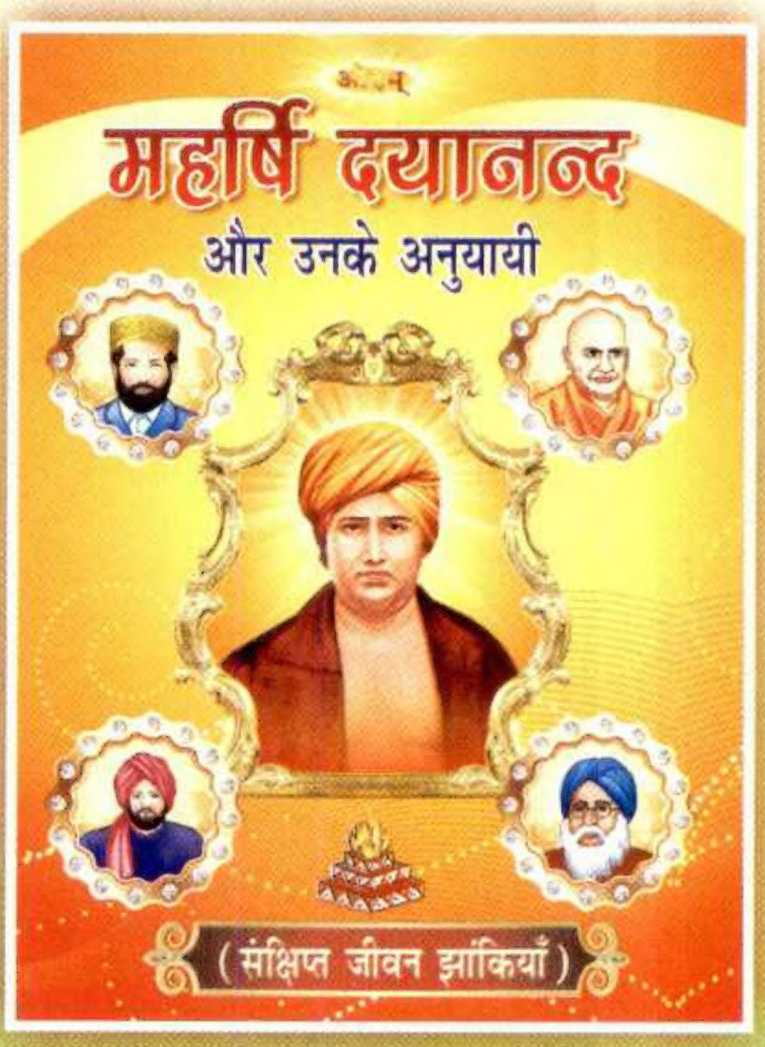

प्रकाशक-वितरक

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006

फोन-011-43781191

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 फोन न. 011-23360150]23365959

email:aryasabha@yahoo.com website:delhisabha.com

प्रचारार्थ मूल्य : 25/- मात्र